**Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences** ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 2, Mar-Apr – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 06/04/2020 Accepted on : 19/04/2020 Publication Date: 30/04/2020

# बाल्मीकि रामायण में सांस्कृतिक परिवेश

**डॉ. सुनीता सिवाच**
एसोसियेट प्रोफेसर
इंस्टीटयूट ऑफ हायर लर्निंग
बी.पी.एस. महिला विश्वविधालय
खानपुर कलां, सोनीपत

**सारांश:** महर्षि बाल्मीकि को संस्कृत साहित्य का आदि कवि माना जाता है। वह सांसारिक जीवन (मोह) को त्याग कर परमात्मा के ध्यान में लग गए। उन्होनें कठोर तपस्या की। तपस्या में वे इतने लीन हो गए कि उनके पूरे शरीर में दीपक ने अपनी वाल्मीक बना ली। इसी कारण उनका नाम बाल्मीकि पड़ा। तमसा नदी के किनारे अपने आश्रम में रहकर उन्होनें कई रचनाएं की जिनमें से 'रामायण' धार्मिक ग्रन्थ विशेष रूप से ख्यापि प्राप्त कर चुका है। आदि कवि बाल्मीकि मतानुसार इस धार्मिक ग्रन्थ का निर्माण गेय काव्य के रूप में हुआ है। महर्षि बाल्मीकि कवि, शिक्षक और ज्ञानी ऋषि थे, उनके ग्रन्थ रामायण में इनकी स्पष्ट छाप दिखती है। रामायण ग्रन्थ भारत ही नहीं अपितु पूर्ण विश्व की एक अमूल्य कृति है। यह भारतीय साहित्य का एक श्रेष्ठ महाकाव्य है। रामायण काल में सांस्कृकि परिवेश देखते ही बनता है। उस समय सांस्कृतिक व सामाजिक परिवेश संगीतमय था। विभिन्न सामाजिक अवसरों पर संगीत कला को पूर्ण रूप से महत्त्व दिया जाता था। प्रत्येक खुशी एवं युद्ध व अत्योष्टि के समय पर की विभिन्न प्रकार के वाद्यो के साथ प्रस्तुति दी जाती थी अर्थात् सामाजिक व सांस्कृतिक अवसर किसी भी प्रकार से संगीत से अछूत नहीं थे।

## भूमिका:

महर्षि बाल्मीकि का जन्म हजारों वर्षों पूर्व भारत में हुआ था। वह कब और कहां जन्मे इस विषय में कुछ भी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। बचपन में महर्षि बाल्मीकि का नाम रत्नाकर था। महर्षि बाल्मीकि को संस्कृत साहित्य का आदि कवि माना जाता है। ईश्वर प्रेरणा से वह सांसारिक जीवन (मोह) को त्याग कर परमात्मा के ध्यान में लग गए। उन्होनें कठोर तपस्या की। तपस्या में वे इतने लीन हो गए कि उनके पूरे शरीर में दीपक ने अपनी वाल्मीक बना ली। इसी कारण उनका नाम बाल्मीकि पड़ा। तमसा नदी के किनारे अपने आश्रम में रहकर उन्होनें कई रचनाएं की जिनमें से 'रामायण' धार्मिक ग्रन्थ विशेष रूप से ख्यापि प्राप्त कर चुका है। आदि कवि बाल्मीकि मतानुसार इस धार्मिक ग्रन्थ का निर्माण गेय काव्य के रूप में हुआ है।

महर्षि बाल्मीकि कवि, शिक्षक और ज्ञानी ऋषि थे, उनके ग्रन्थ रामायण में इनकी स्पष्ट छाप दिखती है। रामायण ग्रन्थ भारत ही नहीं अपितु पूर्ण विश्व की एक अमूल्य कृति है। यह भारतीय साहित्य का एक श्रेष्ठ महाकाव्य है। महर्षि बाल्मीकि त्रिकालदर्शी ऋषि थे। रामायण काल में सांस्कृकि परिवेश देखते ही बनता है। उस समय सांस्कृतिक व सामाजिक परिवेश संगीतमय था। विभिन्न सामाजिक अवसरों पर संगीत कला को पूर्ण रूप से महत्त्व दिया जाता था। प्रत्येक खुशी एवं युद्ध व अत्योष्टि के समय पर की विभिन्न प्रकार के वाद्यो के साथ प्रस्तुति दी जाती थी अर्थात् सामाजिक व सांस्कृतिक अवसर किसी भी प्रकार से संगीत से अछूत नहीं थे।

प्रारंभ से अंत तक संगीत का प्रचुर मात्रा में प्रयोग होता है। रामायण में साम तथा गान्धर्व दोनों प्रकार के गायन के सम्बन्ध में प्रचुर उन्नति के प्रमाण उपलब्ध होते हैं। सामगान केवल यज्ञ आदि तक सीमित था। वैदिक संगीत तथा गान्धर्व संगीत तदतिरिक्त प्रसंगों पर अथवा यज्ञयाज्ञों में यज्ञ विधि से बाहर किया जाने वाले लौकिक संगीत था, तथा वही परिश्रमिक प्रदान किया जाता है। आलौकिक पुरूषों के जन्म, विवाह आदि के अवसर पर इनके संगीत का आयोजन किया जाता था। राम के जन्म तथा विवाह पर देव–दुंदुभियां बनजे लगी थी। गान्धर्व तथा अप्सराओं का क्रमशः गायन तथा नृत्य भी हुआ था। अश्वमेघ यज्ञ में भृष्यंग आदि पुरोहितगण मंत्रों तथा गीतों का शिक्षानुकूल गायन करते थे।

**''भृष्यंगादयो मंत्रे शिक्षाक्षर समन्वितै।**
**गीतिभिर्मधुरै स्निग्धमन्धगहवानिये जायतैः।**

राजा दशरथ की अंत्येष्टि के अवसर पर सामग विद्वानों के द्वारा सामगान यथाशास्त्र किया गया था।

**''जगुच्क्ष ते यथाशास्त्र तत्र सामीनं सामगाः''**

स्वागत तथा विदाई जैसे समारोहों में संगीत का यथोचित स्थान था। राज परिवार के सदस्यों तथा अतिथि विशेषों का स्वागत शंख, दुन्दुभि आदि के घोष तथा मागध आदि के स्तुति गान से किया जाता था। पुत्रेष्टि यज्ञ को करने के लिए भृत्यंग को लेकर जब दशरथ ने नगर में प्रवेश किया था तब शंख दुंदुभियों के निर्घोष से उनका स्वागत किया गया था। रामायण में नृत्य तथा नर्तक दोनों का उल्लेख मिलता है। नृत्य का प्रयोग धार्मिक तथा लौकिक दोनों के समारोहों पर किया जाता था। शिव की अर्चना के पश्चात् रावण ने गायन तथा नृत्य किया था।

**''समर्थयित्वा स निशाघरौ जगौ प्रसार्य हस्तान प्रणनर्वचागृतः''**

रामायण कालीन समाज में संगीत सर्वत्र व्याप्त था। भेरी, दुंदुभि, मृदंग तथा शंख आदि विशिष्ट वादित्रों का प्रयोग युद्धों में उत्साह वर्धन के लिए तथा राजाज्ञा एवं सेना संगठन को सूचित करने के लिए किया जाता था। रामायण में संगीत विषयक अनेक रूपक एवं उत्प्रेक्षाएं पाई जाती हैं। जिनसे विदित होता है कि तात्कालीन सामाजिक एवं साहित्यिक जीवन संगीतमय हो चुका है। अयोध्या, किष्क्रिन्धा तथा लंका आदि नगर सदैव वाद्यों की सुमधुर ध्वनि से निनादित रहते थे। सीता का मनोरंजन वीणा तथा वेणु के स्वर से किया जाता था। राम से वियुक्त सीता को देखकर आदि कवि बाल्मीकि को ऐसी वीणा का स्मरण हो आया जिसका रूप बहुत दिनों से अल्पष्ट होने के कारण विकृत हो गया था तथा जो तंत्रियों से विरहित हो गई हो।

**''किलष्टि रूपा मंस्पर्शादियुक्तासिव वल्लकीम्।**
**स तां भतृहितो चुक्तामयुक्तां रक्षसांयशे।।''**

एक बार अयोध्या में एक बहुत बड़े उत्सव का आयोजन हुआ। नगर की गलियां और सड़कें जनता से खचाखच भरी हुई थी। दसों दिशाओं में गायकों और वादकों के संगीत स्वर एवं जनता के आनन्द प्रेरित कोलाहल के शब्द गूंज रहे थे। जब रावण का वध करके भगवान राम ने अयोध्यापुरी प्रत्यागमन किया तो वहां भरत ने शत्रुघ्न को हर्षपूर्वक आज्ञा दी कि नगर के सभी देवस्थानों का पूजन सुगन्धित पुष्पों से हो। गायन वादन के विभिन्न अवसरों पर वाद्यों का उल्लेख रामायण में यत्र तत्र मिलता है। दशरथ और रावण के राजमहल में भेरी, मृदंग, शंख, मुरज तथा पणव के घोष से व्याप्त रहते थे।

वीणा के अन्तर्गत वल्लकी तथा विपंचों का विशेष प्रचार था। तत् तथा अवनद्ध वाद्यों को जिस दंड से बजाया जाता था उसका नाम 'कोण' था। ताल वाद्यों में मृदंग, वालिग्य, उर्ध्वक, आडम्बर, पणव, मुरज आदि का विशेष प्रचलन था। पटह भेरी तथा दुन्दुभि का प्रयोग प्रायः युद्ध के समय किया जाता था। सुषिर वाद्यों में वेणु तथा शंख का विशेष प्रयोग किया जाता था।

ताल को प्रदर्शित करने के लिए ताल शब्दों का उच्चारण कर अर्थात् हाथ से ताल देने की भी प्रणाली थी। रामायण काल में द्रुत लय का प्रयोग सबसे पहले किया जाता था।

ऐसा भी वर्णन मिलता है कि राम के आदेशानुसार लव–कुश ने स्वर, पद, ताल, प्रमाण, मूर्च्छना अंगों का शास्त्रशुद्ध गायन किया जाता था। गान्धर्व के अन्तर्गत श्रुति, स्वर, ग्राम, मूर्च्छना, जाति, स्थान तथा प्रमाण आदि का अध्ययन किया जाता था। गान्धर्व का गान मार्गी तथा देशी दोनों शैलियों में किया जाता था। इस प्रकार बाल्मीकि रामायण काल में सांस्कृतिक परिवेश पूर्ण रूप से संगीतमय था।

**संदर्भ सूचीः–**

1. संगीत कला विहार 1987.
2. भारतीय संगीत का इतिहास–डॉ. शरचन्द्र श्रीधर परांजपे
3. रामायण अयोध्या कांड सर्ग 71
4. भारतीय संगीत का इतिहास– उमेश जोशी
5. रामायण खंड 30.
6. हिन्दूस्तानी संगीत शास्त्र–भगवत शरण शर्मा
7. भारतीय संगीत शास्त्रों में वाद्यों का चिंतन– डॉ. अंजना भार्गव
8. भारतीय संगीत का इतिहास (आध्यात्मिक एवं दार्शनिक)–डॉ. सुनीता शर्मा
9. हिन्दूस्तानी संगीत में तंत्री वादकों का योगदान– श्रीमति वीना शर्मा